Chap-7

अध्याय सात

आधुनिक काव्य परम्परा और 'तरुण'

डॉ0 'तरुण' आधुनिक युग मे हिन्दी के एक ऐसे लब्धप्रतिष्ठ बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं, जो एक अनुभूतिशील कवि होने के साथ–साथ गम्भीर विचारक एव सशक्त गद्यकार भी है। उन्होंने अपने बहुआयामी सर्जनरत जीवन में अपने सभी रूपों– कवि, समीक्षक, शोधक, निबन्धकार, शिक्षक, प्रशासक आदि– के दायित्वो का निर्वाह गंभीरतापूर्वक किया है और हर क्षेत्र में सफलता के मानदण्ड स्थापित किए हैं। किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि उनके सभी साहित्यिक रूपों मे उनका कविरूप ही प्रमुख है। अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनो के प्रति ईमानदार 'तरुण' ने कविता के ही लिए कविता नही की, बल्कि कविता उनके लिए आत्मप्रकाशन–जीवनाभिव्यक्ति– का माध्यम है, एक 'भीतरी भूख, दुर्निवार या अदम्य प्राणाकांक्षा की अभिव्यक्ति' हैं, जो भीतर से मथित होकर उमडा उसे व्यक्त करने के लिए कवि ने कविता को ही सर्वप्रिय और सर्वोपरि माध्यम माना। उनका समस्त काव्य उनके काव्य–विश्वास, आस्था, निष्ठा एव सर्जन के प्रति पूर्ण समर्पण भाव का स्वयसिद्ध प्रमाण है। कवि का विश्वास है कि ***"विज्ञान–राजनीति–जर्जर इस विश्व को कविता ही चन्द्रिकालोकित वंशी–स्वर–लहरी पुलकित हरी–भरी शैल–तटी में परिणत कर सकेगी।"*** [1] वे यहाँ तक मानते है कि ***"सच्ची काव्य–साधना प्रकाशपूर्ण, दिव्य, उच्चगामी, निर्मल और पौरुषवान् जीवन की ओर ले जाने में पूर्णतया समर्थ है।"*** [2] अभिप्राय यह है कि 'तरुण' फैशन के कवि नही हैं। कविता उनके लिए साधना है।

हिन्दी कविता के इतिहास में गीत–सर्जन की परम्परा बहुत पुरानी है। आधुनिक हिन्दी काव्य के छायावादोतर काव्य सर्जन काल मे इस परम्परा का और अधिक परिपाक हुआ। इस प्रकार आधुनिक काव्य विशेषकर गीतकाव्य की विशिष्ट प्रवृत्तियों को लेकर उभरता रहा है। इसलिए कुछ आलोचकों ने छायावाद काव्य सृष्टि को गीत काव्य की सज्ञा से भी विभूषित किया है। छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा ने छायावादी काव्य रूप को गीत–प्रधान काव्य के नाम से सम्बोधित किया है। छायावादी काव्यधारा के अनन्तर छायावादोतर हिन्दी कविता का इतिहास प्रगीत–सर्जना की दृष्टि से अपना एक विशेष स्थान का अधिकारी काव्य काल खण्ड हैं। स्वच्छन्दतावादी/छायावादी परिकल्पना–रंजित रोमानी प्रगीतों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप प्रगीत विधा को विशेष संबल मिला। इतिहास के इसी क्रम में प्रगीत सृष्टि रचना–प्रक्रिया के लिये युग–बोध की अनिवार्यता को स्वीकार किया गया। वस्तुतः प्रगीत केवल वैयक्तिक ही नहीं होता, बल्कि उसकी वैयक्तिकता सामाजिकता से जुडी हुई होती है। सामाजिक–आर्थिक विसंगतियों की शताब्दी में गीतकार एकान्त में, करील–कुंज मे, कालिदी के तट पर प्रगीत का रोमांस–भरा स्वर कैसे छेड सकता है? युगीन परिस्थितियों से ऑखें कैसे चुरा सकता है? प्रगीत व्यक्ति विशेष ने लिखा है, केवल इसी आधार पर उसे वैयक्तिक कहना ठीक नहीं हैं।

आधुनिक समकालीन प्रगीतकार को यथार्थवादी बोध के लिए प्रगीत–सर्जन में बौद्धिकता का भी सहारा लेना पड़ता है। लेकिन प्रगीत में बौद्धिकता को कलात्मक प्रणाली के रूप में अपनाया जाता हैं इसलिए इसमें बौद्धिक चेतना की स्थिति वहीं तक गाह्य है जिससे प्रगीत की मूल चेतना घायल न हो। बौद्धिकता कलात्मक ढलाव में यहाँ अपना रूप सॅवारती है। इस कलात्मक ढलाव मे प्रगीत सामाजिक एवं वैयक्तिक, राग एवं बुद्धि इत्यादि बिन्दुओं को अपनी चेतना में समेटता है, फलस्वरूप स्वच्छन्दवृत्ति आधुनिक/समकालीन जीवन–बोधों को अपनी प्रगीतात्मक शैली मे प्रस्तुत करती है। गीत और चिन्तन जब एक–दूसरे से मिलते हैं, तब प्रगीत का जन्म होता है। जर्मनी के महान स्वच्छन्दतावादी कवियों ने अपनी प्रतिभा से प्रगीत को लोकगीत की शैली के रूप मे रेखांकित किया है। इस रचना–प्रक्रिया में उन्होंने अपने परिवेश को भी भली भॉति चित्रित किया है। ऐसी स्थिति मे आन्तरिकता में बाह्य स्थितियों का भी ऑकलन होता रहता है। यह सब आधुनिकता–बोध, युग–बोध के कारण होता है। डॉ0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' की सर्जनात्मकता में तरुणाई है।

राष्ट्रीयता, जातीय अतीत, लोक–चेतना, सामुहिक अवचेतन, आदिम गन्ध, विद्रोह–क्रान्ति, शक्ति–प्रचण्डता, उद्दाम स्वातन्त्र्य भाव, धरती की मादक गन्ध, पचेन्द्रिय सवेदना, गीतात्मकता, प्रकृति के प्रति गंभीर प्रेम, प्रेम–रोमांस, विराट का स्वप्न, रंगीन कल्पना–वैभव, सौन्दर्य–चेतना आदि से भरपूर 'तरुण' का काव्य–चिन्तन, अनुशीलन, समीक्षा और शोध के लिए विस्तृत क्षितिज खोलता है। उपरोक्त तत्त्वों और उपादानों के मिश्रणों और तन्तुओ के रगीन ताने–बाने मे से ही कवि की स्वच्छन्दतावादी–नवस्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों का ज्ञान व आकलन भली–भॉति हो सकता है।

डॉ0 'तरुण' अपनी लेखनी से काव्य–गंगा को जनजीवन के कूलों के सिंचन से वैयक्तिकता एवं सामाजिकता की समन्वित साधना के नवस्वच्छन्दतावादी भाव–चेतना एवं शिल्प के धनी कलाकार हैं। इनकी कविताओं मे प्रगीत धारा की तरलता, सरलता एवं ताजगी तो देखने को मिलती ही है साथ ही वैचारिक क्रान्ति की ज्वाला भी देखने को मिलती है। अशान्तिमय परिवेश–ओवष्टन और अन्त मन की अभिव्यक्ति की तीव्र आकांक्षा आधुनिक–समकालीन काव्य की मुक्तक गीतात्मकता का प्रधान कारण है। आधुनिक समकालीन चेतना का युग नवीन प्रयोगों का युग है। कवि भाषा और छन्दों के नवीन प्रयोगों में भी प्रयत्नशील है। छन्दों की नवीन उद्भावना और प्रक्रिया में पूर्व समग्र से अधिक स्वतन्त्रता, स्वच्छन्दता लक्षित होती है। यह नवीन छन्द–योजना परम्परा के विरुद्ध आधुनिक विद्रोह का अंग है। आधुनिक कवियों में स्वच्छन्दतावादी दृष्टि का बोध परम्परा से प्राप्त छन्दों के त्याग और स्वतन्त्र तथा नवीन छन्दोद्भावना से भी लगता है। नूतन छन्दविधान के प्रयोगों के मूल में इसी स्वच्छन्दतावादी चेतना का उत्स काम करता है।

छायावादोत्तर गीतिधारा के प्रमुख रचना–शिल्पी डॉ0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' का भी आधुनिक–समकालीन हिन्दी कविता के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान है। डॉ0 'तरुण' का काव्य–रचना–संसार अपने समकालीन रचनाकारों के लिए, साहित्यकारों के लिए महत्त्वपूर्ण है। छायावादोत्तर गीत–धारा के तथा समकालीन रचना–संसार के प्रमुख कवियों की तरह डॉ0 'तरुण' का रचना–ससार भी महत्त्वपूर्ण एवं साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गरिमा से सम्पृक्त है। लोक–चेतना, लोक–संस्कृति एवं आँचलिकता के अंकन–चित्रांकन क्रम में डॉ0 'तरुण' हिन्दी के महान कवियों की कतार में खडे नजर आते हैं। उन महत्त्वपूर्ण कवियों में डॉ0 शिवमंगलसिंह 'सुमन', केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, त्रिलोचन, मुक्तिबोध तथा केदारनाथ सिंह इत्यादि कवियों की भॉति ही इन्होंने अपनी कविताओं में काव्य का शृंगार किया है। अतः छायावादोतर गीत–धारा के महत्त्वपूर्ण शब्द शिल्पियों में डॉ0 'तरुण' भी सदैव स्मरणीय रहेगें।

डॉ0 शिव कुमार मिश्र के अनुसार ***"अनुभूतियाँ उनकी अपनी रही हैं। उनकी निजता कहीं भी खण्डित नहीं होने पायी है। वे जीवन को अपने ढंग से झेलने–सहने और भोगने के क्रम में जन्मी अनुभूतियाँ हैं, और यही कारण है कि वे अपने अलग ताप और अपनी अलग ऊष्मा से पाठक की पहचान करा सकी हैं। उधार ली गई अनुभूतियों का पाथेय लेकर दशकों तक समान आस्था और विश्वास के साथ एक ही पथ पर बढ़ते चले जाना संभव भी नहीं है। जाहिर है कि 'तरुण' के रचनाकार ने आस्थापूर्वक दशकों की यात्रा तय की है– बिना बिखरे और विचलित हुए।"*** [3]

'तरुण' के काव्य में हिन्दी–काव्य के अनेक वादों की प्रवृत्तियो की खोज–बीन अन्य अनेकानेक विषयों की ही तरह अपने आप में पूर्ण शोध का एक महत्त्वपूर्ण विषय है। इनके प्रारम्भिक कृतित्त्व के आधार पर इन्हें कोरा छायावादी कवि भी नहीं कहा जा सकता। छायावाद के शलाका–पुरुषों के प्रभाव के सन्दर्भ मे इनके काव्य का गहराई से अध्ययन करने वाले पायेगें कि 'पंत' का प्रकृति–प्रेम, 'निराला' का औदात्य, 'प्रसाद' की अनुभूति शीलता और महादेवी वर्मा की पीडा और सवेदना के तत्त्व एक अकेले 'तरुण' में समाहित है। शोषितो एव उत्पीडितो के प्रति सहानुभूति तथा उद्बोधन एवं विप्लव के स्वर भी इनकी रचनाओं में मिलते है– तो क्या इस

आधार पर इनकी गिनती प्रगति वादी कवियों मे की जाये? या आधुनिक भावबोध, यथार्थ के बेबाक चित्रण और शिल्प के अनेक नूतन प्रयोगों के आधार पर इन्हे प्रयोगवादी माना जाए? इस सन्दर्भ में डॉ0 देवी शंकर द्विवेदी ने उनका ठीक मूल्याकन किया है– ***"वादों के ठप्पे लेकर 'तरुण' की रचनाओं में प्रवेश करने वाले व्यक्ति निराश नहीं होंगे। उनमें उन्हें रहस्यवाद, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद सभी कुछ मिल जायेगा, भाव जगत में भी, काव्य के बाह्य उपकरणों में भी। 'तरुण' की किसी रचना का महत्त्व इस बात में नहीं आँकना चाहिये कि वह किस वाद की प्रतिनिधि है उनकी रचना का महत्व इस बात में है कि रसग्राही मनुष्य अपनी सहज अवस्था में सहस्त्रों वर्षों बाद भी उनमें वहीं प्राप्त करेगा जो हम आज प्राप्त कर रहें हैं। भाषान्तर आड़े आ जाये तो बात अलग है।"*** [4]

अपने परवर्ती कृतित्व में 'तरुण' युग–जीवन' एवं सामाजिक परिवेश से अपेक्षाकृत अधिक संपृक्त हो गये। यों मानव समाज और संस्कृति के प्रति संवेदना का तत्व न्यूनाधिक रूप में इनकी आरम्भिक रचनाओं में भी प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से दृष्टिगोचर होता है। ग्राम्य जीवन एवं प्रकृति का चित्रण करते समय कवि का मन यहाँ बसी दीन मानवता के प्रति द्रवित हो उठा है। जीवन की मधुरता व मादकता के साथ–साथ 'तरुण' के कवि की यह युग–चेतना उन्हें कोरे रोमानियो से अलग करती है। डॉ0 विश्वम्भर नाथ उपाध्याय के मतानुसार– ***"मैं आपके गीतों में खूब गोताखोरी करता हूँ आपके गीतों, गीत नुमा कविताओं का रंग सबसे अलग है– यह चीजें उन्हें आकर्षक बनाती हैं। अपने भावुकता के साथ–साथ जो युग चेतना है वह कोरे रोमानियों से आपको भिन्न करती है।"*** [5]

इस प्रकार छायावाद की कल्पक उड़ान के साथ–साथ 'तरुण' भारतेन्दु से लेकर द्विवेदी युग तक की लोकचेतना को अपने काव्य में समेटे हुए हैं। अपने मनोराज्य के स्वर्णिम संसार मे विचरते हुए भी वे आरम्भ से ही लोकहृदय से जुड़े रहे हैं। कालान्तर में तो उन्होंने व्यापक मानवी पीडा के तीखे व गहरे दबावों को अपने अन्तर में अधिक तीव्रता से अनुभव किया है। इस प्रकार मानव, समाज और संस्कृति से जुड़कर इनकी काव्य चेतना निरन्तर विकसित और समृद्ध होती गई। यह विकास, यह परिवर्तन कहीं भी ओढ़ा हुआ प्रतीत नहीं होता, वरन् परिवर्तित युग के साथ–साथ काव्य चेतना विकास–क्रम में जो–जो शुभ–अशुभ, मधु–तिक्त प्रकृत अनुभूतियाँ कवि के अन्तर में उपजी हैं, उन्हीं का निश्छल प्रकाशन है।

'तरुण' वस्तु–वैविध्य में भी अप्रतिम है। इनके काव्य का चित्रफलक वैविध्यपूर्ण और विशद है। एक सजग चिन्तक एव संवेदन शील व ईमानदार कवि के लिए ऐसा होना स्वाभाविक ही है। अपने विविध सहज प्राकृतिक अनुभूतियों के बल पर कवि क्षितिज–सा विस्तार लेकर चला है। परिवेश का समस्त मधु–तिक्त रस ग्रहण करते हुए समस्त काव्य–आन्दोलनों को आत्मसात् करते हुए वह अपनी काव्य–गगरी में वास्तव में एक बडा आकाश समेट पाया है। लघु रजकण से लेकर विशाल आकाश तक, ओस बिन्दु से लेकर विराट सागर तक उसकी काव्य–वस्तु का प्रसार है। वस्तु ही नहीं भाव–जगत में भी कवि एक साथ जीवन के सुदूर विपरीत दोनों ध्रुवों को पकडे हुए है। उनके काव्य में स्वस्थ परम्परा और आधुनिकता दोनों का अद्भुत संगम है। वह आदर्शों के उतुंग शिखरों का स्पर्श करते हुए भी यथार्थ की धरती पर दृढता से खडा है। उसकी काव्य–चेतना जीवन के दोनों ही छोरों का स्पर्श एक साथ करती है इसीलिए हमारी समस्त चेतना व अन्त सत्ता पर उनका काव्य प्रभाव इतना गहरा व स्थायी होता है।

चुंकि 'तरुण' का काव्य मानव के अन्त–बाह्य सम्पूर्ण जीवन का पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है, अतएव आम आदमी के जीवन की भॉति इनका काव्य भी विविधताओ से पूर्ण है। उसमे जीवन का विष भी है और सुन्दरतम भी, मौन का मादक मधुर संगीत भी है और आत्मा की चीख भी, नारकीय मनुष्य भी है और दिव्य मनुष्य भी, दुःख की सीमा भी है और सुख की सीमा भी। वह प्रेम, घृणा, हर्ष–विषाद, हिसा–करुणा, हास–रुदन, ध्वस–निर्माण, जड–चेतन सबका संगम है। 'तरुण' के काव्य में पाठकों को कवि की मदिर

रूमानियत और उद्दाम पौरुष, मादक शृंगार और रसार्द्र भक्ति, आत्महता–बोध और वज्र–आस्था, मार्मिक मृत्यु–बोध और दुर्दम जिजीविषा का परिचय एक साथ मिलता है इसलिए सामान्य कवियो से भिन्न 'तरुण' विपरीत जीवन–स्थितियों का चितेरा है, मन के सीमान्तों का कवि है। इनमें कही कोई भाव बाह्यारोपित नही है। एक ही हृदय में प्रकृत भाव से जीवन के दोनों छोर विद्यमान है और काव्य मे दोनों का निर्वाह समान कौशल और ईमानदारी के साथ हुआ है। विशेश ध्यातव्य तो यह है कि कवित्त का गुण कहीं भी क्षीण नही होने पाया है।

वस्तु के ही अनुरूप परिवर्तित टैक्नीक मे सर्वत्र उच्च कोटि के कवित्त्व के दर्शन होते हैं। प्रख्यात कवि श्री वीरेन्द्र कुमार जैन ने 'तरुण' की कविता की विविधता, विशदता, गहनता एवं भावसत्यता से प्रभावित होकर लिखा– ***"तुम्हारा यथार्थ सही माने में भोगा हुआ है, वह फैशनेबल जनवादी कवियों की तरह तराशा हुआ और बनावटी–बुनावटी नहीं है। संस्कृत के ध्वनि सौन्दर्य और लालित्य से लगाकर छायावाद के रोमान और कल्पक उड़ान को अपने में समेटे तमाम युगी काव्य–मोड़ों से निपटता हुआ, तुम्हारा कवि आधुनिक काव्य की गूढ़ सांकेतिकता तक यकसा यांत्रित है। तमाम धाराएँ तुममें संगमित हैं और तुम्हारी कविता एक महाधारा जैसी गर्भवान लगती है। सबसे अधिक मुग्ध हुआ मैं तुम्हारी अभिव्यक्ति की सच्चाई पर। एक बहुत सच्ची, निश्छल, सरल आत्मा का सहज सौन्दर्य–प्रवाह हैं–ये कविताएँ.... ।"*** [6]

मानव और प्रकृति दोनों ही मिलकर तो सृष्टि की काया का निर्माण करते हैं और विधना की वैविध्यपूर्ण सृष्टि के चतुर चितेरे 'तरुण' ने अपनी कविता के लिए मानव–मन की अतल गहराइयों से लेकर असीम आकाश तक जो भी विषय चुना, प्रकृति का साथ कहीं छूट नही पाया है। 'तरुण' के काव्य में प्रकृति अपने किसी न किसी रूप में सर्वत्र विराजमान है। उनके प्रणयाकुल हृदय के भावों की रंगीन मादकता और मनोराज्य के स्वर्णिम स्वप्नो के ससार का सौन्दर्य तो प्रकृति के बिना अधूरा है ही, समसामयिक जीवन के किन्हीं अरोचक पहलुओं को देखकर भी वे प्रकृति की ओर ही भागते हैं। प्रकृति के विराट फलक को अपने काव्य में समेटने वाले कवि 'तरुण' के लिए प्रकृति एक नैसर्गिक तत्त्व है। कारण है प्रकृति के प्रति उनका सच्चा अनुराग।

डॉ0 शान्तिस्वरूप गुप्त ने कवि की काव्य रचना 'हिमांचला' (1952) के सन्दर्भ में प्रकृति निरूपण का जो आलेख प्रस्तुत किया है वह हमारी भी बात को सटीकता व विशदता से प्रस्तुत कर देगा। 'तरुण' की कविताओं में अंकित प्रकृति के सहज किन्तु रम्य चित्रों के प्रति उनका कथन है– ***"ऐसे चित्र उसी कवि की लेखनी से निःसृत हो सकते हैं, जिसके पास अनुभूति हो, भारतीय संस्कृति में आस्था हो, जिसने बचपन में प्रकृति के सानिध्य में जीवन की अमूल्य घड़ियाँ बितायी हों और उसके सभी रूप – सुन्दर और कुरूप, कोमल और भयावह, मधुर और प्रचण्ड देखे हों और उसने प्यार किया हो। उसने अलस अपराह्न प्रहर में वन–सरिता के निर्जन तट, उस पर स्थित सौंधी–सौंधी महक वाले सरसों और सौंफ के खेतों, उनमें चक्कर काटती विभिन्न रंगों का इन्द्रधनुष निर्माण करती तितलियों को देखा है, वह सरिता तट पर झुके खजूर के पेड़ के मौन शिखर–पत्रों से निकल रहे चन्द्रमा की शीतल चाँदनी में नहाया है, झिल्ली–झींगुर के संगीत को सुन कर उसका हृदय आप्यायित हुआ है, गेंदा के फूलों और झूम–झूमकर किलक उठती सरसों को देखकर उसका मन पैंगे भर–भरकर नाचा है, बबूल के पेड़ के नीचे उसने थककर विश्राम किया है; नीम, सफेदा, बरगद, कटहल, अमलतास, जामुन और पीपल के पेड़ों के छायादार घने कुंजों में से जाती हुई, अरहर के खेतों की उर्मिल पगडंडी पर मतवाली चाल से चलती ग्राम–वधू को देखा है, जंगली फूलों के बीच से गाय के बछड़ों को पूँछ–उठाते दौड़ते निहारा है, चने के खेत के किनारे वायु–विकम्पित बबूल की छाया को मखमली पौधों पर अपना मृदु–जाल बिखेरते हुए***

देखकर उसका मन बाँसों उछला है और ग्राम्य–प्रकृति को प्रातः से रात्रि तक विभिन्न प्रहरो में अपना रूप बदलते निहार कर मौन–मुग्ध हुआ है। प्रकृति के इस निकट सामीप्य ने उसे मन्त्रमुग्ध ही नहीं किया, उसकी लेखनी को भी इन चित्रों को शब्द–रूप देने की प्रेरणा दी है और चित्र अंकित किए हैं, वे अपनी सरलता, में डूबकर उसने जो चित्र अंकित किए हैं, वे अपनी सरलता, स्वाभाविकता और अकृत्रिमता के कारण सहज ही पाठक को लुभा लेते हैं।" [7]

मानव–जीवन और प्रकृति को उन्होंने एक ही साथ अपनी चेतंना में कितना भरा है– उनकी इस परम प्रशंसनीय उपलब्धि का बडा सटीक बखान डॉ0 गुप्त के ही समर्थ शब्दो में ही प्रस्तुत है– *"प्रकृति और जीवन को सरस, एकतान करने में जितनी सफलता 'तरुण' को मिली है उतनी कदाचित ही अन्य किसी हिन्दी कवि को प्राप्त हुई हो।"* [8]

'प्रथम किरण' 'तरुण' का प्रथम काव्य–संग्रह है। इस संग्रह में सन् 1937 मे दिसम्बर सन् 1945 तक की कविताएँ संग्रहीत हैं। इस काव्यकृति की पहली रचना 'राष्ट्रगीत' राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत है, जिसमें अतीत प्रेम एवं देश–प्रेम की महिमामयी अभिव्यक्ति है। राष्ट्रीय चेतना की भावना से सिक्त 'तरुण' इस कविता में मानववादी चेतना की झंकृति भी ध्वनित है–

"'सुख से जिओ और जीने दो' यह उदार भावना यहीं है,
यहां आत्म–बल पूजय, किसी का पशुबल में विश्वास नहीं है,
तलवारों से नहीं, जगत् पर पायी विजय हृदय के द्वारा!
महिमामय है देश हमारा!" [1]

इस कृति में 'गॉव की ओर', 'गॉव की सॉझ', 'प्रभात', 'वसन्त–प्रभात', 'सावन', 'ओस–कण', 'दो चिडियां', 'हरी–घास', 'पावस–श्री', 'एकान्त–क्षणों मे' आदि कविताओं में कविवर 'तरुण' प्रकृति–प्रेम, लोक–प्रेम, ग्रामीण चेतना की छवियों के प्रति आसक्ति रखते हैं। इसलिए वे कविताएँ उन्हें स्वच्छन्दतावादी कवियो की पक्ति में साधिकार बिठाने में सहायक बनती है। डॉ0 'तरुण' इसीलिए अपनी प्रारम्भिक रचनाओ के कारण स्वच्छन्दतावादी छायावादी कवियों की कतार को सुशोभित करते है इन ग्रामीण चेतना की कविताओ के अवलोकन के आधार पर अंग्रेजी के रोमांटिक कवि वर्ड्स्वर्थ की याद बरस आ जाती है। 'तरुण' अपनी कविताओं में प्रकृति–प्रेम और देहाती जीवन से जुडी अनुभूतियों को बडी बारीकी से रेखांकित करते हैं।

इस प्रकार हिन्दी मे प्रकृति–प्रेम एवं ग्राम चेतना के सफल चितेरा के रूप में 'तरुण' को स्वच्छन्दतावादी–छायावादी सुकोमल कवि पन्त तथा वर्ड्स्वर्थ का–सा काव्य वैभव हिन्दी को देने का श्रेय प्राप्त है।

स्वच्छन्दतावादी/छायावादी काव्य प्रवृतियों के क्रम में इसके अतिरिक्त कई ऐसी कविताएँ हैं, जिनमें आन्तरिक वैयक्तिक चेतना, प्रेम–सौन्दर्य के मानवीय धरातल को स्पर्श करती हुई अपनी पहचान देती है। इस क्रम में 'मेरा अस्तित्व', 'अनुभूति', 'याचना', 'आनन्दानुभूति', 'सुख–दुःख', 'संघर्ष पथ पर', 'चितन', जिज्ञासा', 'ऑसू', 'शक्ति का सौन्दर्य–स्वप्न' आदि कविताएँ कविवर 'तरुण' के आन्तरिक प्रेम, वैयक्तिकता के साथ–साथ मानवीय सौन्दर्य की अनुपम भाव–छवियो को रेखांकित करती है।

इस संग्रह में कविवर 'तरुण' की एक ऐसी कविता भी सकलित है– 'बडी बहन प्यारी गुलाब की स्मृति में', जिसमें कवि ने अपनी आत्मीय बहन की मृत्यु के वियोग मे अपनी आन्तरिक वेदना को सहज ही खोलकर रख दिया है।

'प्रथम किरण' की अधिकाश कविताएँ ऐसी है जो हमें प्रसाद तथा पंत की काव्य–शैली की याद को ताजा करती है। कविवर 'तरुण' अपनी इस काव्यकृति– के विषय मे कहते है– *"ये मेरे बाल प्रयत्न हैं। सिन्धु–तट पर बैठकर अपनी*

---

1 'प्रथम किरण' 'राष्ट्रगीत', पृष्ठ 2

कल्पना के अनुकूल मैंने ये रेत के घरौंदे बनाये हैं— जानते हुए भी कि गरजती लहरों के पेट में ये समा जायेंगे। पर निर्माण में ही मनुष्य अमर है। भावी प्रलय की चिन्ता मात्र से सृजन का सुख मानव कैसे छोड़े! नाश और मरण की लीला—भूमि इस मृत्यु—लोक में भी मनुष्य मधुर गीत गा सका और सौन्दर्य की सृष्टि कर सका, यही तो नश्वर मानव की महान विजय है। यदि वह ऐसा न कर सकता तो पीड़ा, क्रन्दन, अशांति और ज्वाला के इस मरुस्थल में वह रहता ही क्यों और जीता ही कैसे? 'प्रथम किरण' में जगत् के अंधकार से संघर्ष पर प्रकाश पाने का प्रयत्न यदि पाठकों के हृदयों में इस किरण का कुछ मधुर आलोक फैला सका तो मुझे बहुत संतोष होगा।" [9]

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY

कुल मिलाकर 'प्रथम किरण' में कवि ने राष्ट्रीय प्रेम, प्रकृति—प्रेम, लोक—चेतना, लोक—संस्कृति, ग्राम्य—जीवन की छवियों को कल्पना और अनुभूति की प्रमाणिकता के निकष पर कसकर स्वच्छन्दतावादी/छायावादी भावबोध एवं शिल्प के धरातल पर पहुँचा दिया है।

'हिमांचला' डॉ0 'तरुण' की दूसरी काव्यकृति है जो सन् 1949 से 52 की अवधि में लिखी गई है। 'हिमांचला' की रचना के सम्बन्ध में डॉ0 'तरुण' ने आरम्भ में ही कहा है, ***"हिमांचला' का रचनाकाल मेरे जीवन की बहुमुखी और मार्मिक अनुभूतियों का काल है, इसलिए इसमें मेरी प्रकाश—चेतना आत्मोल्लास, प्राणोष्मा, सौन्दर्य—स्वप्न, पुलक—कम्प, रोमांच—स्तम्भ और अश्रु—उच्छ्वास आदि सभी का जीवन—सुलभ सतरंगी वैभव विद्यमान है। मेरे हृदय की समस्त सत्ता की अभिव्यक्ति होने के कारण 'हिमांचला' की रचना से मुझे बहुत संतोष है।"*** [10]

'हिमाचला' मे 'मानव—बन, मानव—बन', 'नया जीवन नया समाज', 'निर्माण', 'नवशक्ति', 'उदबोधन', 'प्रेम', 'चाह' शीर्षक कविताओं में मानव की महिमा एव मानवीय प्रेम की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। प्रकृति—प्रेम के गायक कविवर डॉ0 'तरुण' अपनी इस काव्य—कृति मे ग्राम्य—जीवन, लोक—जीवन, लोक—सस्कृति की सूक्ष्म—गहरी अभिव्यंजना इन कविताओ में करते हैं: 'गेंदा के फूल', 'सरसों फूली', 'खेत की ओर', 'ग्राम—वधू' तथा 'माटी के घर' इत्यादि। इस काव्य के अन्त मे 11 गीत भी संकलित हैं। गीत मे कवि की आन्तरिक, वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यंजना तो होती ही है। साथ ही इसमें एन्द्रियता और आत्मीयता का भाव भी निहित रहता है। गीत वस्तुत: आन्तरिक चेतना की प्रस्तुति होती है। इसलिए इसका सम्बन्ध स्वच्छन्दतावादी शिल्प के साथ माना जाता है। इस विधा के द्वारा कवि अपनी आन्तरिक चेतना को बडी बारीकी से प्रस्तुति देता है। इस दृष्टि से 'हिमांचला' के अन्तिम सारे गीत— 'ग्राम विरहिणी दीप जलाती', 'शिशु को चॉद दिखाती माता', 'चमक रहे अम्बर मे तारे', 'कितनी मधुर वह रात थी', 'वे सुन्दर से दिन बीत गये', 'वह कथा सुन क्या करोगे?', 'बीती बाते मत याद दिला', 'मोती का—सा मन टूट गया?', 'इस पीडा का उपचार न कर?', 'दूर गगन में तारा टूटा?', 'लो निशा अब जा रही है?' इन गीतों मे वैयक्तिक चेतना एवं विगतानुभूति का आकलन है। इन गीतो की अपनी वैयक्तिक और सामाजिक महत्ता भी है। कवि ने वैयक्तिक और सास्कृतिक चेतना को बड़ी बारीकी से ईमानदारीपूर्वक अनुभूति की प्रमाणिकता से पाग दिया है। इस सन्दर्भ मे यह महत्वपूर्ण गीत रेखाकित है—

"ग्राम विरहिणी दीप जलाती,
पिया गये परदेस, न आई अब तक हाय, पहुँच की पाती!
ग्राम विरहिणी दीप जलाती।" [1]

इस सम्पूर्ण गीत मे ग्रामीण—सांस्कृतिक चेतना के कई रंग देखने को मिलते हैं। इस गीत में ग्राम—विरहिणी का सच्चा चित्रण हुआ है। इस दृष्टि से यह गीत निश्चय ही स्वच्छन्दतावादी शिल्प एवं भावबोध से अपनी पहचान रोमांटिकता से जोड़ता है—

1 'हिमाचला' 'ग्राम—विरहिणी दीप जलाती', पृष्ठ 93

"बीती बातें मत याद दिला!
जलधारा में दो तिनकों का
संयोग हुआ था, छूट गया!
वह बजती वीणा मौन हुई
निस्सार न टूटे तार मिला!" [1]

कवि अपनी विगत अनुभूतियों में जीवन की महत्त्वपूर्ण संयोग–वियोग की कहानी को याद करता है। इसलिए ऐसी अनुभूति की प्रमाणिकता जो जीवन के सुख–दुःख के साथ संयोग–वियोग की अनुभूतियों में पगी हो– जिसकी चेतना आत्मीयता एवं एन्द्रियता ही हो– यह सब स्वच्छन्दतावादी गीत–शिल्प की ही पहचान है। इस व्यापक फलक पर भाव–बोध एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य की दृष्टि से 'हिमांचला' हिन्दी कविता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्वच्छन्दतावादी/छायावादी काव्यकृति है। इस रचना में मानववादी चेतना, आशा–आस्था तथा निष्ठा को सफलतापूर्वक अभिव्यक्ति दी गई है। आशा, उल्लास, आस्था और निष्ठा से पूर्ण इस कृति की कविताएँ मानवीय चेतना की सच्ची प्रस्तुति देती हैं। कुल मिलाकर 'हिमांचला' में मानववाद, प्रकृति–प्रेम, वैयक्तिक–प्रेम की त्रिधारा प्रवाहित है। इस काव्य–कृति में कवि ने बड़ी बारीकी से मानवीय सौन्दर्य की छवियों को रेखांकित करते हुए सौन्दर्य के लौकिक एवं अलौकिक भाव–बिन्दुओं को भी उभारने का भरसक प्रयत्न किया है।

'ऑधी और चॉदनी' ('प्रथम किरण' और 'हिमॉचला' के बाद डॉ0 'तरुण' की नई काव्य कृति है) जिसका प्रकाशन 1975 मे हुआ था। 'ऑधी और चॉदनी' के आरम्भ मे ही डॉ0 'तरुण' 'ऑधी और चॉदनी' के कथ्य और शिल्प का परिज्ञान देना चाहते हैं: ***"हाँ, 'आँधी और चाँदनी' शीर्षक से विदित हो जाएगा कि इस रचना में मेरे अस्तित्व का समस्त कटुतम और मधुरतम और इन दो सीमान्तों के बीच में पड़ने वाला सारा आत्मद्रव समाविष्ट है। इस दृष्टि से यह रचना संभवतः मेरी काव्य–चेतना के प्रायः सभी प्रवाहों, उर्मियों, स्पन्दनों, अन्तरालों व आयामों का अद्यतन प्रतिनिधित्व करती हुई जान पड़ सके।"*** [11]

इस प्रकार कविवर डॉ0 'तरुण' की इस उद्‌घोषणा से यह तो विदित हो ही जाता है कि इस काव्यकृति में दो सीमान्तों के बीच पडने वाली आन्तरिक चेतना समाविष्ट है। कवि ने यह भी संकेत किया है कि यह रचना उनकी काव्य–चेतना के प्रायः सभी प्रवाहों तथा आयामो का अद्यतन प्रतिनिधित्व करती है। इस रूप में 'ऑधी और चॉदनी' डॉ0 'तरुण' की आधुनिक भावबोध की रचना है ऐसी स्थिति में यह काव्य कृति अपनी चेतना के फलक पर भाव बोध एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य की दृष्टि से स्वच्छन्दतावादी/नवस्वच्छन्तदावादी काव्य–प्रवाह के रूप में चित्रित हो सकी है। 'ऑधी और चॉदनी' संग्रह की कविताएँ दो खण्डों में विभाजित हैं। प्रत्येक खण्ड अपने शीर्षक को सार्थक करता है। 'ऑधी' खण्ड में यथार्थवादी चेतना अपने सर्जनात्मक कल्पना के प्रवाह में व्यंग्यात्मक दृष्टि से समकालीन जीवन–बोध को चित्रित करती है। वस्तुतः समालोचना वैचारिक–अवधारणा के क्रम में यह व्यंग्यात्मक चित्रांकन या रेखांकन 'रोमैंटिक आयरनी' की एक स्वच्छन्दतावादी प्रवृति है जो यथार्थवादी कला–चेतना के साथ उभरती है। सौन्दर्यशास्त्रीय एवं दार्शनिक व्याख्या की जगह पर इनमें कवि ऐतिहासिक और सामाजिक समस्याओं को अपनी चेतना से उभारता है।

इस कृति में आधुनिक जीवन–बोध की मार्मिक कविताएँ संग्रहीत हैं। आधुनिकता–बोध की कई भाव–छवियों को कवि ने अपनी काव्य–कला में चित्रित किया है। कविता की गहराई, उत्कृष्टता, गहरी कला–साधना, मानव की गहन सांस्कृतिक पीडा की सच्ची सवेदना, अभिव्यक्ति की सूक्ष्म चेतना को रंगीन भाव छवियो से 'ऑधी और चॉदनी' भरी हुई है। 'ऑधी' खण्ड मे संकलित एक गीत 'अपनी

1 'हिमाचला' 'बीती बाते मत याद दिला', पृष्ठ 99.

कहो कहानी' अपनी सादगी में बहुत व्यजक है और पूरी रचना समकालीन जीवन की चेतना से जुडी हुई लगती है। यह गीत कवि के नये यात्रा–पडाव/प्रस्थान का भी सकेत देती है–

'अपनी कहो कहानी!
कितनी जुटी हृदय में ज्वाला,
कितना पड़ा आस पर पाला,
धूँआ बनकर, बोलो कितना उड़ा नयन का पानी!
अपनी कहो कहानी!' [1]

राजनैतिक विसंगति को सहज भाव से अभिव्यक्ति देने वाली कविता है– 'डेमोक्रेसी' इस कविता में कवि ने प्रकृति के रूपक के माध्यम से 'डेमोक्रेसी' के नाम पर भीडवाद के नीचे पिसते सत्य का दर्द उभारा है। 'दल–बदलु' भी सीदी–सादी राजनीतिक कविता है। प्रकृति सन्दर्भ की अन्य कविताएँ हैं–'गैंदा के फूल', 'भव्य दृश्य', 'बुझूँगा– मैं अंगार', 'कैमरा', 'जीवन–पतंग' इत्यादि। इन सब कविताओं में संवेदन की समकालीनता, अभिव्यक्ति की सादगी, खुरदरापन तथा व्यंजकता भी खूब उभरी है। इन खण्डों में सामाजिकता के कई आयामों को कवि ने बारीकी से रेखांकित किया है। दूसरे खण्ड में 'चॉदनी' शीर्षक जो मुक्तक कविताएँ हैं उनमें अधिकतर कविताएं मुक्तक गीत के रूप में हैं। इसलिए भाव–बोध एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य की दृष्टि से ये मुक्तक स्वच्छन्दतावादी काव्य प्रवृतियों के काव्य–रूप हैं। इन गीतों में–'हम तुम कही चल दें', 'फूल खिले बेला के', 'न जाने कौन जन्म की बात', 'याद न कर मन प्रीत पुरानी', 'सबका अपना–अपना मन है', 'यह चॉद जिधर से आता है', 'निर्झर', 'मेरे गीत, मौन मत होना' इत्यादि में स्वच्छन्दतावादी/नवस्वच्छन्दतावादी चेतना की झंकृति मिलती है। डॉ0 'तरुण' मानवता, विश्वमानवता, मानव–सौन्दर्य, प्रकृति–सौन्दर्य, मानव–संस्कृति और मानव–पीड़ा एवं संत्रास के कवि है। दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक वृत्तियो की सशक्त अभिव्यक्ति, 'आँधी और चॉदनी' में हुई है। काव्य, दर्शन और मनोविज्ञान की त्रिवेणी 'आँधी और चाँदनी' में प्रवाहमान है। आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास में स्वच्छन्दतावादी और नवस्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों के सर्जक के रूप में डॉ0 'तरुण' सदैव स्मरणीय रहेगे। इस काव्यकृति में लोक–चेतना, लोक–परिवेश, लोक–संस्कृति, आदर्श, यथार्थ, राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता को कवि ने सशक्त अभिव्यक्ति दी है। आधुनिक परिवेश एवं आधुनिकता–बोध के कवि डॉ0 'तरुण' आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास के एक प्रमुख व सशक्त हस्ताक्षर हैं।

'हम शिल्पी संत्रास के' का प्रकाशन सन् 1984 का है। इसमें 61 कविताएँ हैं। 'हम शिल्पी सत्रास के' के रचना–शिल्प के सन्दर्भ में कवि का कथन है: ***"मुझे कुछ कहने का अधिकार नहीं है, केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि इसमें वस्तु और शैली की मैंने अपने लिए अनेक नई भूमिकाओं को तोड़ा है। कई नई पगडंडियाँ पकड़ी हैं और मेरी आज की विक्षुब्ध चेतना के लिए मैंने एक अभिव्यक्ति ग्रहण की है।"*** [12]

वस्तुत: कवि ने इस काव्यकृति में अपनी चेतना की पीड़ामयी, वेदनामयी अभिव्यक्ति को (जैसा कि 'प्रथम किरण' में अपनी बडी बहन 'गुलाब' के प्रति शोक–गीत की रचना की थी, उसी तरह) 'अमित स्मृति–कुंज' शीर्षक स्तम्भ में अपने इकलौते पुत्र के निधन पर लिखी कविता। (वस्तुत शोक–गीत की ऐतिहासिक कडी में 'निराला' का 'सरोज–स्मृति' की स्मृति को ताजा करती है।) को हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है। 'निराला' को अपनी एकमात्र सतान के लिए– इकलौती बेटी सरोज के लिए 'सरोज–स्मृति'–शोक गीत लिखा। शोक–गीत मे वैयक्तिकता, आन्तरिकता की वेदनामयी अभिव्यक्ति होती हैं। 'अमित–स्मृति–कुंज' की पहली रचना 'नियति–नंगा

---

1 'आँधी और चॉदनी' 'अपनी कहो कहानी', पृष्ठ 74

नाच' मे कवि ने अपनी वेदना–पीडा को सयमित ढंग से चित्रित किया है। इसके बाद 'अमर अभिलेख', 'काली दिवाली', 'पुत्र मरण-जन्म–गॉठ', 'शान्त', 'स्मृति का गुलाब' शीर्षक कविताओ मे कवि का आन्तरिक वेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई हैं। ये रचनाएँ आन्तरिक वेदना की यथार्थमयी अभिव्यक्ति होने से स्वच्छन्दतावादी चेतना के नवोन्मेष यथार्थवादी–बोध के कारण नवस्वच्छन्दतावादी भावबोध एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य से सिक्त है।

'तरुण–काव्य ग्रन्थावली' डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक, कवि श्री रामेश्वर शुक्त अंचल तथा कवि श्री कुमार विमल द्वारा सपादित कवि 'तरुण' की लगभग सवा चार सौ विषयानुसार वर्गीकृत कविताओं का सचित्र–सजिल्द संकलन–ग्रन्थ है जो सन् 1988 में नेशनल पब्लिशिग हाऊस, नई दिल्ली द्वारा भव्य रूपाकार में प्रकाशित हुआ और जिसका विमोचन 1989 में भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ0 शंकर दयाल शर्मा द्वारा हुआ। इसकी अनेकानेक कविताओ में से स्वच्छन्तदावादी/नवस्वच्छन्तावादी कविताओं का सहज ही चयन किया जा सकता है। यह ग्रन्थ कवि की गत छह दशकों की अखण्ड निष्ठामयी काव्य–यात्रा का एक प्रमाणिक दस्तावेज है तथा कवि की समग्र सर्जनात्मक विकासात्मक काव्य–चेतना का उज्ज्वल दर्पण है।

1991 में 'खूनी पुल पर से गुजरते हुए' नामक कवि की लगभग 100 आधुनिकतावादी कविताओं का डॉ0 प्रकाश मनु द्वारा मौलिक भूमिका–सहित संकलन–ग्रन्थ संपादित हुआ जिसमें 1988 से 1991 के बीच लिखी हुई कुछ नवीन कविताएँ भी हैं।

सन् 1995 में 'यह लो मेरे हस्ताक्षर' का प्रकाशन हुआ। ये कविताएँ 'तरुण' की प्रौढि की कविताएँ हैं जिनमें संघर्ष, तनाव, जीवन की छोटी बडी सच्चाइयॉ, खीझ, आक्रोश, अकुलाहट के साथ जीवन के सकारात्मक मूल्यों का भी वर्णन हुआ है।

डॉ0 'तरुण' लोक चेतना के सशक्त रचना–शिल्पी हैं। उनकी कविताओं में शुरू से लेकर अन्त तक लोक–समता की मधुरता–सहजता का उच्छलन होता रहा है। लोक समता के साथ–साथ 'तरुण' की कविताओं में प्रेम–प्रकृति एवं विद्रोह क्रान्ति का बड़ा ही मनोहारी रूप मिलता है। उदाहरण के रूप में 'निर्झर' और 'मैं बनवासी होता' शीर्षक कविताएँ ली जा सकती हैं।

प्रेम–प्रकृति एवं क्रान्ति–भावना की भॉति, 'तरुण' की कविताओं में आदिम वृत्तियों को बड़ी बारीकी से उभारा गया है। ये प्रस्तुतियॉ डॉ0 'तरुण' को महान स्वच्छन्दतावादी 'रचना–शिल्पी' के रूप में विश्व–साहित्य के सामने उद्घोषित करती है।

"डॉ0 'तरुण' की कविताओं में स्वच्छन्दतावादी–नवस्वच्छन्दतावादी लहर आज भी तरंगित है। आधुनिक कवियों में स्वच्छन्दतावादी–नवस्वच्छन्दतावादी प्रवृतियों की दृष्टि से रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' काफी सशक्त एवं प्रभावशाली कवि हैं।" [13]

<u>डॉ0 रघुवीर शरण 'व्यथित'</u> के अनुसार, ***"कविवर डॉ0 'तरुण' के काव्य में छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, अकवितावाद, व्यंग्यवाद और शुद्ध काव्यवाद के चरण एकत्र देखे जा सकते हैं और इन सबका रसायन–रूप भी। वे कभी स्वच्छन्द सौन्दर्य–विद्रोहवादी कवियों की श्रेणी में खड़े दीखते हैं, कभी प्रगतिवादियों की, कभी प्रयोगवादियों की, कभी अकवितावादियों की। सहजभाव से कहे तो हिन्दी काव्य और अंग्रेजी काव्य के विभिन्न वाद चरणों का प्रभाव उनमें आत्मसात् होकर उनका अपना निर्वाद और समाहारक काव्य–अभिव्यक्तिवाद बन गया है, जो भरत और अभिनवगुप्त की भारतीय रस– निष्पति को आगे बढ़ाकर नवीन और आधुनिक सुकल्प देता है। उनके काव्य में एक सांस्कृतिक और साधनात्मक अभिजात्य सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। लेकिन यह अपूर्व बात है कि समस्त काव्य में भारतीय सांस्कृतिक धरातल पर प्राचीन और नवीन का संगमित रूप उभरता है जो स्नेह के गजब को पहचानता है और मानव–चेतना जमें बर्फ को काटने की युगीन आवश्यकता की विस्फोटक निर्मम संकल्पात्मक अनुभूति से भरा है।"*** [14]

अन्त मे श्री 'तरुण' के काव्य–शिल्प की विशिष्टताओं पर भी समग्र दृष्टि से सक्षेप मे विचार करना अनिवार्य है। वे वस्तु ही नही, शिल्प की दृष्टि से भी एक प्रकृत कवि है। उनकी काव्य–भाषा सर्वत्र छद्मरहित एवं आडम्बर–मुक्त है। हृदय से उमडे भावों की ईमानदार अभिव्यक्ति होने के कारण वह अपने ही सहज सौन्दर्य से मंडित है। कालरिज की उक्ति– 'Strong passions command figurative language.' उनके काव्य पर पूर्णतया चरितार्थ होती है। वस्तु के अनुरूप ही शिल्प के क्षेत्र में भी कवि ने अनेक नूतन प्रयोगों का निर्वाह समान कौशल और सफाई के साथ किया है। जीवन की रोमानियत जहॉ मधुर–मादक स्वरों में व्यक्त हुई हैं, वहॉ भाषा छायावाद की मसृणता, लाक्षणिकता, सुकोमल शब्द–योजना, उपचार–वक्रता, रोमानी कल्पना, आकर्षक बिम्बों, प्रतीकों आदि से युक्त है। काव्य–शिल्प का महीन, सूक्ष्म सौन्दर्य ऐसी रचनाओं मे देखते ही बनता हे। आधुनिक भावबोध या जीवन के कटु यथार्थ का चित्रण करने वाली कविताओ में भाषा प्रखर, व्यंग्यमयी तीखी–कॉटेदार हो गई है। इन कविताओं की भाषा उर्द् व अंग्रेजी के सटीक शब्दों व ठेठ प्रयोगवादी उपमानों से युक्त है। चित्रात्मकता का गुण 'तरुण' की भाषा में विशेष कांति पैदा करता है। अपनी सूक्ष्म अन्वेक्षण–शक्ति, तीव्र–अनुभूति, सजग संवेदना उर्वर कल्पना और पूर्ण भाषाधिकार के कारण 'तरुण' हिन्दी काव्य–जगत में एक आकर्षक बिम्ब स्रष्टा के रूप में सदैव याद किए जायेगे।

न भाव और न शिल्प की दृष्टि से वे किसी वाद अथवा काव्य–प्रवृति से बॅधकर चले हैं। उन्होंने एक जागरूक पाठक के रूप में साहित्य–जगत की गति से प्रभावित होते हुए उसके प्रमुख तत्त्वों को सहज भाव से आत्मसात करके भी अपनी मौलिक सर्जनाशक्ति और कवित्व प्रतिभा के बल पर हिन्दी काव्य–क्षेत्र मं अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। कई दशकों तक पूर्ण निष्ठा भाव से अपनी काव्य–कला के प्रति समर्पित रहकर जो प्राणपोषक काव्य उन्होंने हिन्दी–जगत को भेंट किया है, वह अत्यन्त मूल्यवान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' · 'हिमाचला' के 'आभास' से
2 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' 'प्रथम किरण' की 'निवेदन' से
3 (स0) डॉ0 ओमानन्द रू0 सारस्वत 'कविवर 'तरुण' सर्जन के चरण', पृष्ठ 67
4 (स0) डॉ0 ओमानन्द रू0 सारस्वत 'कविवर 'तरुण' सर्जन के चरण', पृष्ठ 58
5 (स0) डॉ0 ओमानन्द रू0 सारस्वत 'कविवर 'तरुण' · सर्जन के चरण', पृष्ठ 119–120
6 (स0) डॉ0 ओमानन्द रू0 सारस्वत 'कविवर 'तरुण' सर्जन के चरण', पृष्ठ 125
7 डॉ0 शान्तिस्वरूप गुप्त 'डॉ0 'तरुण' दृष्टि और सृष्टि', पृष्ठ 44–45
8 डॉ0 शान्तिस्वरूप गुप्त 'डॉ0 'तरुण' दृष्टि और सृष्टि', पृष्ठ 40–41
9 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' 'प्रथम किरण' की 'निवेदन' से
10 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' . 'हिमाचला' के 'आभास' से
11 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' 'ऑधी और चॉदनी' के 'समर्पण' से
12 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' 'हम शिल्पी सत्रास के' की 'पहले थोडा–सा– यह' से
13 डॉ0 अजब सिह 'आधुनिक काव्य की स्वच्छन्द प्रवृत्तियॉं', पृष्ठ 203–204.
14 (स0) डॉ0 हरिश्चन्द्र वर्मा 'कवि 'तरुण' का काव्य–ससार', पृष्ठ 63